# आत्मा

## (पुराना नियम)

# दिन 1
# परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था

**उत्पत्ति 1:2**

*"पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहिरे जल के ऊपर अन्धियारा था, तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।"*

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की आत्मा का यह पहला सन्दर्भ है। परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डरा रहा था। इसके बाद क्या हुआ हम जानते हैं। पृथ्वी अनेक चीजों से भर गई।

यीशु को अपना प्रभु स्वीकार करने के पहले के समय की कल्पना करो। हम सभी गहरे थे परन्तु इस गहराई के ऊपरी सतह पर अन्धियारा था। हम में से अधिकांश लोग महत्वहीन, असुरक्षित और खाली महसूस कर रहे थे।

परमेश्वर की आत्मा ने हमें देखा और हमको अनेक चीजों से भर दिया। आत्मा को यह अच्छा लगा और हमको भी अच्छा लगा।

**उपयोग:**

उन घटनाओं को याद करो जब हमने पहली बार परमेश्वर को अपने जीवन में पहला स्थान देना और उनका अनुसरण करना आरम्भ किया। इन बातों के द्वारा परमेश्वर की प्रशंसा करो।

# दिन 2
# आत्मा मनुष्यों से सदा विवाद करता न रहेगा

**उत्पत्ति 6:3, 5-6**

*"प्रभु ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्यों से सदा विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य शरीर मात्र है; उसकी आयु केवल 120 वर्ष की होगी। प्रभु ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टता कितनी बढ़ गई है, और उसके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है, निरन्तर बुरा ही होता है। और प्रभु पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ।"*

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की "आत्मा" का यह दूसरा सन्दर्भ है परन्तु प्रसंग बिलकुल विभिन्न है। अब पृथ्वी इतनी सारी चीजों से भर गई थी परन्तु परमेश्वर का मन अत्यन्त दु:खी था। परमेश्वर पृथ्वी पर की सारी चीजों की एक–एक जोड़ी और एक परिवार को छोड़ बाकि की सारी चीजों को हटा देना चाहते थे।

आज जब हम मसीह के पीछे चल रहे हैं, तो हमारा जीवन कैसा है। सम्भव है कि आप 6 वर्षों से या 10 वर्षों से, 25 वर्षों से,या फिर इससे भी अधिक वर्षों से यीशु के पीछे चल रहे हैं, आज हमारा मन कैसा है? हमको देखकर क्या परमेश्वर को अच्छा महसूस होगा या वे अत्यन्त दु:खी होंगे? परमेश्वर ने जिन बातों से हमको भरा है क्या वे उनको निकाल देना चाहेंगे? वह एक जोड़े को छोड़ देंगे ताकि उनके द्वारा हम परमेश्वर से अपना रिश्ता बना सकें।

**उपयोग:**

जब हमने परमेश्वर का अनुरसरण करना आरम्भ किया तब परमेश्वर ने हमें जिन–जिन बातों से भरा है आओ हम उन बातों का विचार करें। उन बातों का उपयोग आज हम कैसे कर रहे हैं? परमेश्वर के साथ बात करो।

# दिन 3

# क्या हमें इस जैसा कोई और मनुष्य मिल सकता है?

**उत्पत्ति 41:38-40**

***फिरौन ने अपने कर्मचारियों से कहा , "क्या हमको ऐसा पुरूष जैसा यह है, जिस में परमेश्वर का आत्मा रहता है, मिल सकता है? फिर फिरौन ने युसुफ से कहा, "परमेश्वर ने तुझे जो इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं। इस कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रचा चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझ से बड़ा ठहरूंगा।"***

एक व्यक्ति जिसे हमारे परमेश्वर की अधिक जानकारी नहीं है,वह इस बात की पुष्टि कर रहा है कि युसुफ में परमेश्वर का आत्मा है। युसुफ में ऐसी कौनसी खास बात थी? इतना समझदार और बुद्धिमान। युसुफ ने इस बात का श्रेय परमेश्वर को दिया। आओ हम पहले के वचनों में फिरौन से किये गए युसुफ की बातों पर विचार करें:

- परमेश्वर जो काम करनेवाला है उसने उनको फिरौन पर प्रकट किया(25)
- परमेश्वर जो काम करनेवाला है, उसे उस ने फिरौन को दिखाया है(29)
- यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है(32)

परमेश्वर ने हमें भी समझदार और बुद्धिमान बनाया है। क्या हम इसका श्रेय परमेश्वर को दे रहे हैं? हमारे बातचीत में "परमेश्वर" का उल्लेख हम कितनी बार करते हैं?

**उपयोग:**

आओ हम कुछ ऐसी परिस्थितियों को याद करें जब युसुफ की तरह परमेश्वर ने शक्तिशाली रूप से हमारा उपयोग किया और किसी ने हमें परमेश्वर का पुरूष/स्त्री कहा।

# दिन 4
# परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण

**निर्गमन 31:1-3**

***फिर प्रभु ने मूसा से कहा, "सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता और यहूदा के कुल का है, नाम लेकर बलाता हूँ। मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाला आत्मा है परिपूर्ण करता हूँ।"***

वह पहला व्यक्ति जिसका उल्लेख पवित्रशास्त्र में "परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण" व्यक्ति के रूप में किया गया है।

- यह किसने कहा? खुद परमेश्वर ने।
- और क्या कहा गया है? परमेश्वर की आत्मा से, बुद्धि से, प्रवीणता से, ज्ञान से, और सब प्रकार के कार्यों की समझ से परिपूर्ण।

क्या हम पर यह बात सही उतरती है? परमेश्वर ने हमें सिर्फ उसकी आत्मा से ही नहीं, वरन् बुद्धि, समझ और विशेष कौशलों से परिपूर्ण किया है, जो उसके राज्य को बनाने के लिये आवश्यक हैं।

हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि बसलेल ने उन कौशलों के द्वारा शानदार काम किया होगा। यदि वो ऐसा न करता, तो क्या होता? तो परमेश्वर किसी दूसरे व्यक्ति को चुनकर वो सारे गुण उसे दे देते और अपनी योजना पूरी करते।

परमेश्वर ने जिन कौशलों से हमें परिपूर्ण किया है, परमेश्वर का राज्य बनाने के लिये हम उन कौशलों का उपयोग कैसे कर रहे हैं? क्या हम उन कौशलों का उपयोग परमेश्वर को महिमा देने के लिये कर रहे हैं या फिर हम इस संसार में इतने व्यस्त हैं कि हमारे पास परमेश्वर के राज्य के लिये समय ही नहीं है?

**उपयोग:**

क्या हम हमारे आत्मिक उपहारों का उपयोग आम भलाई के लिये कर रहे हैं? इसे अधिक से अधिक करने का निर्णय करो और परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिये खुद को वचनबद्ध करो।

# दिन 5
## लोगों का भार उठाने में आत्मा सहायता करता है

**गिनती 11:16-17**

*प्रभु ने मूसा से कहा , इस्त्राएली धर्मवृद्धों में से सत्तर ऐसे पुरूष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के धर्मवृद्ध और उनके सरपंच हैं। उन्हें मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े रहें। तब मैं उतरकर तुझसे वहाँ बातें करूँगा। और जो आत्मा तुझमें है उसमें से कुछ लेकर उन में समवाऊँगा। वे इन लोगों का भार तेरे साथ उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले न उठाना पड़ेगा।*

इसके पहले के वचन मूसा के विचारों के बारे में बताते हैं। मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता; क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है। यदि तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिससे मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊँ।(व.14-15)

निराशा वास्तविक है। लेकिन परमेश्वर भी वास्तविक हैं। और ऐसे ही आशा भी। जब हम अत्यन्त परेशानी में होते हैं तब परमेश्वर हमें मजबूत करते हैं।

जब वे परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हो जाएँगे, तब वे क्या करेंगे? वे लोगों का भार उठाएंगे। हम कितना औरों का भार उठा रहे हैं?

**उपयोग:**

जो लोग परेशान और बोझ से दबे हुए हैं उनके साथ कुछ समय बिताकर उन्हें प्रोत्साहन दो।

# दिन 6
# जब आत्मा उनमें समाया तब वे भविष्यवाणि करने लगे

**गिनती 11:25-26**

*तब प्रभु बादल में होकर उतरा और उस ने मूसा से बातें कीं, और जो आत्मा मूसा में था उसमें से लेकर उन सत्तर धर्मवृद्धों में समवा दिया। जब वह आत्मा उनमें आया तब वे भविष्यवाणि करने लगे। परन्तु फिर और कभी भविष्यवाणि न की। परन्तु दो मनुष्य छावनी में रह गए थे, उनमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था। उन में भी आत्मा आया; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिये गए थे। वे छावनी में ही भविष्यवाणि करने लगे।*

परमेश्वर जब कुछ करने का निर्णय बना लेते हैं, तो वो उसे करते ही हैं फिर चाहे हम उस सभा में उपस्थित हों या न हों। जब हमें किसी अगुवे, गुरू या फिर देखभाल करनेवाले के रूप में चुना जाता है......तो उनके वचनों का प्रचार (भविष्यवाणि)करने का सामर्थ परमेश्वर हमें प्रदान करते हैं।

यह पढ़ना कि, परमेश्वर ने मूसा में जो आत्मा था उसमें से कुछ लेकर उन सत्तर धर्मवृद्धों में समवा दिया हमारे लिये एक दिलचस्प बात है। परमेश्वर के उन पुरूषों और महिलाओं के आस–पास रहना कितना महान है जो आत्मा की अगुवाई में चलते हैं। इस बात की बहुत अधिक सम्भावना है, कि परमेश्वर आत्मा के उस शक्ति से हमें सक्षम बनाएं।

**उपयोग:**

मूसा के समान आपके जीवन में कौन है? उसके साथ समय बिताओ और उसके जीवन के बारे में सुनो।

# दिन 7
# भला होता कि प्रभु अपना आत्मा सब लोगों में समवा देता

**गिनती 11:27-29**
*तब किसी जवान ने दौड़कर मूसा को बतलाया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में भविष्यवाणि कर रहे हैं। तब नून का पुत्र यहोशु जो मूसा का निी सेवक और उसके चुने हुए वीरों में से था, उस ने मूसा से कहा, हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे। मूसा ने उससे कहा, क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि प्रभु की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और प्रभु अपना आत्मा उन सब में समवा देता।*

ऐसा भी हो सकता है कि, कभी–कभार यहोशु की तरह जोश में आकर हमें भी शायद यह बात पसन्द न आए कि परमेश्वर उन लोगों का उपयोग करे जो कुछ नियमों का पालन नहीं करते। यहाँ तक कि वे लोग कुछ अच्छा काम करें तो भी हम चाहते हैं कि परमेश्वर उन्हें रोकें। लेकिन मूसा ने कुछ अलग रीति से इस परिस्थिती को सम्भाला।

मूसा चाहता था कि हर कोई भविष्यद्वक्ता बने और परमेश्वर हर एक का उपयोग करें। आज हमारे बारे में क्या? एक शिष्य होने के नाते हमारी इच्छा क्या है, एक अगुवा या देखभाल करनेवाला होने के नाते हमारी इच्छा क्या है? क्या हम यह विश्वास करते हैं कि प्रत्येक चुने हुओं को परमेश्वर ने समान आत्मा से परिपूर्ण किया है?

**उपयोग:**
आओ हम उन समयों के बारे में सोचें जब हमने अपने जोश कुछ गलत काम किया। परमेश्वर की दया और करूणा के लिये उनका धन्यवाद करो।

## दिन 8

## एक अलग आत्मा है!

**गिनती 14:20-24**

*प्रभु ने कहा, तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ; परन्तु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी प्रभु की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी; उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्त्र देश में और निर्जन प्रदेश में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानीं, इसलिये जिस देश के विषय में मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएंगे अर्थात् जिन लोगों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा। परन्तु इस कारण कि मेरे दास कालिब के साथ और ही आत्मा है, और उसने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिस में वह हो आया है, पहुचाऊँगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा।*

उनमें से कोई भी नहीं परन्तु केवल तुम! यह वाक्य कितना मजबूत है? क्या उन छः लाख लोगों में से वह एक था? परमेश्वर ने खुद कहा कि कालिब के पास एक अलग ही आत्मा था और वह पूरे मन से उसके पीछे चला।

जबकि कालिब के आस–पास सारी दुनिया लगातार कुड़कुड़ा रही और शिकायत कर रही थी उनके बीच में रहना कालिब के लिये कितना कठिन रहा होगा।

हम कितनी जल्दी कह देते हैं कि दुनिया बहुत बुरी है? अन्य लोगों के मुकाबले पूरे मन से परमेश्वर के पीछे चलते हुए क्या हम अलग रीति से जी रहे हैं? क्या हम इस संसार के सदृश बन रहे हैं या फिर अपनी बुद्धि के नए हो जाने से हमारा चालचलन भी बदलता जा रहा है? रोमियों 12:2

**उपयोग:**

आओ हम परमेश्वर के सामने विवाह के वायदों को याद करें। मैं................. आपको अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करता हूँ, ताकि आपको पाऊँ और थामे रहूँ, अच्छे और बुरे समय में, अमीरी और गरीबी में, बीमारी और स्वास्थ्य में, प्रेम करने, संजोए रखने और मरते दम तक आपकी आज्ञा का पालन करूँ।

# दिन 9
# आत्मा ने श्राप को आशीष में बदल दिया

**गिनती 24:1-2, 10**

***यह देखकर कि प्रभु इस्त्राएल को आशीष ही दिलाना चाहता है, बिलाम पहले की तरह शगुन देखने को न गया, परन्तु अपना मुँह निर्जन प्रदेश की ओर कर लिया। बिलाम ने अपनी आँखें उठाईं और इस्त्राएलियों को अपने कुल के अनुसार बसे हुए देखा। परमेश्वर का आत्मा उसपर उतरा।***

***तब बालाक का कोप बिलाम पर भड़क उठा, उसने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा, मैंने तुझे अपने शत्रुओं को श्राप देने के लिये बुलावाया, परन्तु तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है।***

कभी–कभी परदे के पीछे परमेश्वर क्या करते हैं न तो हम यह जान पाते हैं और न ही समझ पाते हैं। जब परमेश्वर आशीष देने का निर्णय करते हैं, तो वे किसी भी व्यक्ति, जगह, परिस्थिती का उपयोग कर आशीष देते हैं। परमेश्वर जो करना चाहते हैं वह करने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता।

विचार करो कि यहाँ पर बालाक ने परमेश्वर के लोगों को श्राप देने की पूरी तैयारी कर ली थी परन्तु आत्मा ने श्राप को आशीष में बदल दिया।

हमें यह प्रश्न पूछना चाहिये कि, क्या परमेश्वर हमें आशीष देने के लिये प्रसन्न हैं? इस दृश्य की कल्पना करो, बालाक हाथ पर हाथ पीट रहा है।

**उपयोग:**

क्या हम कभी ऐसी परिस्थिती में पड़े हैं जब किसी ने हमें श्राप देने या फँसाने का विचार किया और परमेश्वर ने हमें बचाया/आशीष दी। परमेश्वर को उनके प्रेम, सामर्थ और अचूकता के लिये धन्यवाद दो।

# दिन 10
# अगुएपन की आत्मा

**गिनती 27:18-20**

*प्रभु ने मूसा से कहा, तू नून के पुत्र यहोशु को लेकर उस पर हाथ रख। वह ऐसा पुरूष है जिस में मेरा आत्मा बसा है। और उसको एलीआजर याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उसके सामने उसे आज्ञा दे। अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिस से इस्त्राएलियों की सारी मण्डली उसकी मान माना करे।*

यदि हम अगुवेपन के बारे में सोचें, तो मूसा एक अद्भुत अगुवा था। छः लाख से भी अधिक लोगों का नेतृत्व किया। उसने यह कैसे किया हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। स्पष्ट है कि परमेश्वर ने शक्तिशाली रूप से उनकी अगुवाई की।

मूसा के बाद अब किसी को उसकी जगह लेनी थी। यहाँ हम देखते हैं कि यह जिम्मेदारी परमेश्वर यहोशु को सौंप रहे हैं। परमेश्वर कहते हैं, एक पुरूष जिसमें अगुवेपन का आत्मा बसता है। इससे पहले लोगों ने यहोशु को हमेशा मूसा के साथ और उसकी मदद करते देखा। तो अधिकांश रूप से अगला अगुवा वही होता है जो पिछले अगुवे का अनुकरण करे।

अगुवाई केवल दफतर या कलीसिया आदि में ही नहीं परन्तु घर पर होती है। प्रत्येक माता, पिता और बुज़ुर्ग एक अगुवा है। बच्चे या कम उम्र के लोग बड़ी उम्र के लोगों को एक अगुवे के रूप में देखते और उनकी मदद तथा उनका अनुकरण करना चाहते हैं।

**उपयोग:**

एक अगुवे होने के नाते अपने घर, मिनिस्ट्री और ऑफिस की अगुवाई करने में हम कितने अच्छे हैं? क्या कुछ ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति वचनबद्ध रहने के हमारे गुण के कारण हम जैसे बनना चाहते हैं?

# दिन 11
## आत्मा का सामर्थ

**न्यायियों 3:9-11**
***तब इस्त्राएलियों ने प्रभु की दोहाई दी, और उसने इस्त्राएलियों के लिये कालेब के छोटे भाई ओत्नीएल नामक एक कनजी छुड़ानेवाले को ठहराया, और उसने उनको छुड़ाया। उस में प्रभु का आत्मा समाया, और वह इस्त्राएलियों का शासक बन गया, और लड़ने को निकला। प्रभु ने अराम के राजा कूशत्रिशातैम को उसके हाथ में कर दिया; और वह कूशत्रिशातैम पर जयवन्त हुआ। तब चालिस वर्ष तक देश में शान्ति बनी रही। उन्हीं दिनों में कनजी ओत्नीएल मर गया।***

ओत्नीएल से शुरू करते हुए न्यायियों की किताब आत्मा के सामर्थ को महान रूप में प्रदर्शित करता है। परमेश्वर का आत्मा गिदोन (6:34), यिप्तह (11:29), शिमशोन (14:6) में समाया।

इन सभी में एक आम बात क्या थी?
- युद्ध लड़े और इस्त्राएल को छुड़ाया।
- देश में शान्ति फैली।

एक निराशाजनक स्थिति को एक शान्तिपूर्ण स्थिति में बदलने में हमारा उपयोग कर सकते हैं। आत्मा हमें शेर को फाड़ डालने की क्षमता प्रदान कर सकता है।

**उपयोग:**
उन समयों को याद करो जब परमेश्वर ने आपको/आपके परिवार को या किसी ओर को छुड़ाने में आपकी मदद की; और उस बात के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

# दिन 12
# आत्मा आपको एक अलग व्यक्ति में बदल देता है

**1शमूएल 10:6-7**

*तब प्रभु का आत्मा तुझपर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर भविष्यवाणि करने लगेगा। तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा। जब यह चिन्ह तुझे देख पड़ेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उस में लग जाना; क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ रहेगा।*

कल्पना करो कि कोई शाक्तिशाली व्यक्ति आपसे यह कहे, “जो भी काम करने का अवसर तुझे मिले उसे कर डाल, क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है।” बिलकुल यही बात शमूएल ने शाऊल से कही। लेकिन शर्तें लागू हैं।

जब यह चिन्ह पूरे हो जाएंगे, फिर जो जी चाहे वो करो....इन चिन्हों में यह बात शामिल है कि तुम भविष्यवाणि करोगे और तुम एक अलग व्यक्ति में बदल जाओगे।

ऐसी ही प्रतिज्ञा हमें भजन संहिता **1:3** में दी गई है। वह व्यक्ति उस वृक्ष के समान है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।

**उपयोग:**

भजन संहिता **1** पर मनन करो।

# दिन 13
# प्रभु का आत्मा उठ गया

**1शमूएल 16:14-16**

***प्रभु का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और प्रभु की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। शाऊल के कर्मचारियों ने उससे कहा, "सुनिए, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है। हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूंढकर ले आएं। जब-जब परमेश्व की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब-तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।"***

सुनने में यह प्रोत्साहनजनक नहीं लगता कि, परमेश्वर का आत्मा उठ गया। और ऊपर से प्रभु की ओर से दुष्ट आत्मा उसे सता रहा था।

आओ हम उन बातों पर विचार करें जो शाऊल के कर्मचारियों ने उससे कहा, "***सुनिए, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है।***" ऐसा प्रतीत होता है कि शाऊल के कर्मचारी इस बात को स्पष्ट रूप से देख पा रहे थे, जबकि शाऊल नहीं देख पा रहा था। अक्सर हमारी आत्मिक स्थिति हम से ज्यादा दूसरों को अधिक स्पष्टता से दिखाई देती है।

उन्होंने वीणा बजाने की सलाह दी, ताकि शाऊल अच्छा महसूस कर सके। जब हम घबराए हुए होते हैं, तो उस समय गाना गाना या संगीत सुनना राहत देता है। क्योंकि गीत हमारे अन्तरआत्मा से शक्तिशाली रूप से बात करता है।

**उपयोग:**

आपके कुछ मनपसन्द गीत गाओ।

# दिन 14
# आत्मा ने योद्धाओं को भक्तों में बदल दिया

**1शमूएल 19:19-21,23**

*जब शाऊल को इसका समाचार मिला कि दाऊद रामा में के नबायोत में है, तब शाऊल ने दाऊद के पकड़ लाने के लिये दूत भेजे। जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को भविष्यवाणि करते हुए , और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी भविष्यवाणि करने लगे। इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी भविष्यवाणि करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी भविष्यवाणि करने लगे। तब वह ज़ूर, अर्थात् रामा के नबायोत को चला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामा के नबायोत पहुँचने तक भविष्यवाणि करता हुआ चला गया।*

आत्मा का यह एक असामान्य काम था – उन लोगों पर उतरना जो परमेश्वर की खोज में नहीं थे, और ना ही पवित्र आत्मा से भरने की चाह रखते थे। दाऊद को सुरक्षित रखने के लिये परमेश्वर ने ऐसा किया, जो लोग दाऊद को पकड़ने के लिये आए थे, उन लोगों को "निहत्ता" करने का परमेश्वर का यह एक तरीका था। इब्री शब्द का अनुवाद, "भविष्यवाणि" का अर्थ गीत गाना और परमेश्वर की स्तूति करना और साथ ही "भविष्य में होनेवाली घटनाओं को बताना", भी हो सकता है।

परमेश्वर ने दाऊद और शमूएल की रक्षा की, एक सेना को भेजकर नहीं बल्कि पवित्र आत्मा को भेजकर ताकि वह योद्धाओं को भक्तों में बदल दे। "हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं हैं। फिर भी गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा हम सामर्थी हैं।" (2कुरिन्थियों 10:4)

**उपयोग:**

हमारी भक्ति आज कैसी है? हमारी भक्ति में किस चीज़ की कमी है, हम इसे बेहतर कैसे बना सकते हैं या इसे और ऊँचा कैसे उठा सकते हैं?

# दिन 15
# आत्मा निर्देश और चेतावनी देता है

**नहेम्याह 9:20,30**

*वरन् तू ने उन्हें समझाने के लिए अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मान उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा।*
*तू तो बहुत वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपनी आत्मा से नबियों के द्वारा उन्हें चिताता रहा, परन्तु वे कान नहीं लगाते थे, इसलिये तू ने उन्हें देश-देश के लोगों के हाथों में कर दिया।*

- व.22 इस चक्र की शुरूआत तब होती है, जब परमेश्वर अपने लोगों को अपनी अच्छाई दिखाते हैं और परमेश्वर के लोग आशीष पाते हैं।
- व.26 फिर खुशहाली और बहुतायत के चलते, परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया।
- व.27 फिर परमेश्वर सुधार लाते हैं – अपने लोगों को होश सम्भालने की चेतावनी।
- व.27 जिसके फलस्वरूप लोग फिर से परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं।
- व.28 आशीष और सन्तुष्टता पाकर फिर से परमेश्वर के लोग उनसे मुँह मोड़ लेते हैं, और यह चक्र चलता रहता है।
- व.31 जैसे यह चक्र चलता रहता है, तो प्रत्येक चक्र की गति पहले चक्र से और गहरी होती जाती है – परन्तु परमेश्वर नहीं बदलते।

**उपयोग:**

नेहम्याह अध्याय पर मनन करो और समझो कि कैसे आत्मा निर्देश और चेतावनी देता है और कैसे परमेश्वर अपने प्रेम की वाचा पर बने रहते हैं।

# दिन 16
# हमें परमेश्वर की आत्मा ने बनाया है

**अय्यूब 33:3-6**
***मेरी बातें मेरे मन की सिधाई प्रकट करेंगी; जो ज्ञान मैं रखता हूँ उसे खराई के साथ कहूँगा। मुझे परमेश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है। यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे; मेरे सामने अपनी बातें क्रम से रचकर खड़ा हो जा। देख मैं परमेश्वर के सम्मुख तेरे तुल्य हूँ; मैं मी मिट्टी का बना हुआ हूँ।***

एलीहू ने यह बातें अय्यूब से कही हैं। शायद उसे विश्वास था कि परमेश्वर के सामने वह अय्यूब के लिये एक प्रभावशाली प्रवक्ता बन सकता है। यह एक उल्लेखनीय भाषण है क्योंकि इस बहस में वह पीड़ा को सहने के उद्देश्य के बारे में एक नई अन्तर्दृष्टि पेश करता है।

अय्यूब के मित्रों ने बहस किया था कि उसकी यह पीड़ा इस बात का सबूत है कि परमेश्वर उसे उसके पापों की सज़ा दे रहे हैं, परन्तु अब एलीहू ये बहस कर रहा है कि कभी–कभार परमेश्वर हमें इसलिये पीड़ा सहने देते हैं कि हमें पाप से दूर रखें। दूसरे शब्दों में पीड़ा निवारक हो सकती है दंडात्मक नहीं। अन्ततः परमेश्वर की आत्मा ने हमें बनाया है।

**उपयोग:**
आओ हम जीवन के प्रकाश का आनन्द उठाने हर सम्भव प्रयास करें।

## दिन 17
## आत्मा धरती को नया कर देता है

**भजनसंहिता 104:27-30**

***इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया करे। तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं; तू अपनी मुट्ठी खोलता और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं। तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं; तू उनकी सांस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है।***

सृष्टि पे पहले दिन पवित्र आत्मा पानी के ऊपर मण्डराता है और वही आत्मा ठंडी का मौसम समाप्त होने पर सृष्टि को नया जीवन देता है। “कलीसिया” जो परमेश्वर की नई सृष्टि है उसे भी पवित्र आत्मा जीवन और सामर्थ प्रदान करता है।

मानवजाती ने बहुत हद्द तक प्रकृति पर नियंत्रण करना सीख लिया है; परन्तु जीवन और मृत्यु अब भी परमेश्वर के ही हाथों में है। यह संसार जो परमेश्वर को अनदेखा करता है, उनके खिलाफ विद्रोह करता है, और उनके उदार उपहारों के प्रति बहुत मुश्किल से आभार प्रकट करता है, फिर भी ऐसे संसार के प्रति परमेश्वर कितने उदार हैं।

इसीलिये हम साहस नहीं छोड़ते। यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन–प्रतिदिन नया होता जाता है।(2कुरू.4:16)

**उपयोग:**

हमें दिन–प्रतिदिन नया बनाते जाने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो। उन वचनों को याद करो जिसने हमारी इस आध्यात्मिक यात्रा में हमें बदल दिया है।

# दिन 18
# तुम जहाँ भी जाओ आत्मा वहाँ है

**भजनसंहिता 139:7-8**

***मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊँ? या तेरे सामने से किधर भागूँ? यदि मैं आकाश पर चढ़ूँ, तो तू वहाँ है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊँ तो वहाँ भी तू है।***

आत्मा हर जगह पर उपस्थित है, इस विश्व का कोई कोना या पहलू उससे छिपा नहीं है। परमेश्वर की महिमा स्वर्ग में उपस्थित है; उसका सामर्थ पृथ्वी पर उपस्थित है; नरक में उसका न्याय उपस्थित है; और लोगों के साथ उसका अनुग्रह उपस्थित है।

सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है। जिससे हमें काम है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और बेपरदा हैं। (इब्रानियों 4:13)

**उपयोग:**

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।(1यूहन्ना 1:9)। समय निकालों और कबूली करो।

# दिन 19
## प्रभु का आत्मा मसीह पर है

**यशायाह 11:2-4**

*और प्रभु का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा, और ज्ञान और प्रभु के भय का आत्मा उस पर ठहरा रहेगा। और उसको प्रभु का भय सुगन्ध सा भाएगा। वह मुँह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय लेगा; परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सौंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा।*

जब हम आत्मा की अगुवाई में चलें, तो प्रभु का भय हमारे आनन्द का कारण बनेगा। हम अपने आँखों देखी बातों से न्याय नहीं करेंगे और ना ही कानों सुनी बातों के अनुसार निर्णय लेंगे।

क्या लोगों को हमारे जीवन में प्रभु का आत्मा दिखाई देता है? क्या हम आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं?

**उपयोग:**

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।(मत्ती 5:6) हमारी धार्मिकता कैसी है?

# दिन 20
# आत्मा की अगुवाई में योजनाएँ बनाओ

**यशायाह 30:1-3**

***प्रभु की यह वाणी है, हाय उन बलवा करनेवाले लड़कों पर जो युक्ति तो करते हैं, परन्तु मेरी ओर से नहीं; वाचा तो बांधते परन्तु मेरे वाचा के सिखाये नहीं; और इस प्रकार पाप पर पाप बढ़ाते हैं। वे तुझ से बिन पूछे मिस्त्र को जाते हैं कि फिरौन की रक्षा में रहें और मिस्त्र की छाया में शरण लें। इसलिये फिरौन का शरणस्थान तुम्हारी लज्जा का, और मिस्त्र की छाया में शरण लेना तुम्हारी निन्दा का, कारण होगा।***

हमारी सारी योजनाओं के चलते परमेश्वर की नजरों में आज हम कैसे हैं? क्या हम बलवा करनेवाले बच्चे हैं? बलवा करनेवाले अर्थात् जब दूसरे लोग उनकी राय, और उनके व्यवहार के तरीकों आदि को बदलने की कोशिश करते हैं तो ऐसा करने से साफ इनकार करनेवाले लोग।

आमतौर पर पाप अकेला नहीं होता। जब एक पाप किया जाता है, तो अक्सर उस सोची गई योजना को पूरा करने के लिये अनेक पाप करते जाना आवश्यक हो जाता है।

परमेश्वर के बिना जहाँ भी हमें सुरक्षा महसूस होती है, वह बात और वह स्थान हमारे लिये लज्जा और अपमान का कारण बन जाता है। परमेश्वर का इनकार करना तो एक पाप है ही, और किसी और बात पर भरोसा करना पूरी तरह से एक और पाप है।

**उपयोग:**

अपने कामों को प्रभु पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी।(नीतिवचन 16:3)

# दिन 21
## आत्मा ने परमेश्वर के वचनों को इकट्ठा किया है

**यशायाह 34:16-17**

*प्रभु की पुस्तक से ढूँढकर पढ़ेः इन में से एक भी बात बिना पूरा हुए न रहेगी; कोई बिना जोड़ा न रहेगा। क्योंकि मैंने अपने मुँह से यह आज्ञा दी है और उसी की आत्मा ने उन्हें इकट्ठा किया है। उसी ने उनके लिये चिट्ठी हाली, उसी ने अपने हाथ से डोरी डालकर उस देश को उनके लिये बांट दिया है; वह सर्वदा उनका ही बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी तक उस में बसे रहेंगे।*

परमेश्वर के वचनों का आदर हम कैसे करें? प्रभु की पुस्तक में ढूँढो और पढ़ो। यह क्या ही शक्तिशाली वाक्य है। परमेश्वर की ज्ञान की बातें हमें कब और कैसे मिलेंगी? नीतिवचन हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े, और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे; और प्रविणता और समझ के लिये अति यत्न से पुकारे, और उसको चाँदी की नाईं ढूँढे, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे; तो तू प्रभु के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।

**उपयोग:**

जो चीज आप खोज रहे हैं उसे परमेश्वर के वचन में ढूँढो।

# दिन 22
## किस ने प्रभु की आत्मा को मार्ग बताया?

**यशायाह 40:13-14**
*किस ने प्रभु की आत्मा को मार्ग बताया या उसका मंत्री होकर उसको ज्ञान सिखाया है? उस ने किस से सम्पत्ति ली और किस ने उसे समझाकर न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है?*

परमेश्वर की महान बद्धिमत्ता एक और पहलू है परमेश्वर को अपनाने का। उनके पास नीरस ज्ञान है यह जानने का कि पृथ्वी में कितनी मिट्टी है, और पहाड़ों और चट्टानों का वज़न कितना है।

लेकिन इससे भी बढ़कर यह बात है कि परमेश्वर के पास उस ज्ञान का उपयोग करने की बुद्धिमत्ता है। परमेश्वर इतने ज्ञानी हैं कि, किसी ने प्रभु की आत्मा को निर्देश नहीं दीया; किसी ने भी उसके सलाहकार की तरह उसे नहीं सीखाया।

परमेश्वर किसी सलाहकार की, किसी शिक्षक की आवश्यक्ता नहीं है, और न ही समझदारी का मार्ग दिखानेवाले की।

**उपयोग:**
आत्मा एक उत्तम सलाहकार है उसे पाने से बढ़कर और कुछ भी नहीं, उस आत्मा का धन्यवाद करो।

# दिन 23
# पवित्र आत्मा को खेदित न करो

**यशायाह 63:8-10**
*क्योंकि उस ने कहा, निःसन्देह ये मेरी प्रजा के लोग हैं; ऐसे लड़के हैं जो धोखा न देंगे; और वह उनका उद्धारकर्त्ता हो गया। उनके सारे संकट में उस ने भी कष्ट उठाया, और उसके सम्मुख रहनेवाले दूत ने उसका उद्धार किया; प्रेम और कोमलता से उस ने आप ही उसको छुड़ाया; उस ने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिये फिरा। तो भी उन्होंने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया; इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्वयं उन से लड़ने लगा।*

- हमें पवित्र आत्मा को क्यों खेदित नहीं करना चाहिये?
- परमेश्वर हमारा उद्धारकर्त्ता है।
- जब हम कष्ट में होते हैं, तो उन्हें भी कष्ट होता है।
- परमेश्वर के सामने रहनेवाले दूत ने हमारा उद्धार किया।
- अपने प्रेम और दया के कारण उसने हमें छुड़ाया।
- उसने हमें उठाया और प्रतिदिन हमें उठाए फिरता है।

**उपयोग:**
हमारे जीवन में वो कौनसी बातें हैं जो पवित्र आत्मा को खेदित कर सकती हैं? आओ हम अपने हृदयों को जाँचें।

# दिन 24

## क्या हमारे आस-पास के लोगों को हममें पवित्र परमेश्वर का आत्मा दिखाई देता है?

**दानिय्येल 4:8-9**

***निदान दानिय्येल मेरे सम्मुख आया, जिसका नाम मेरे देवता के नाम के कारण बेलतशस्सर रखा गया था, और जिसमें पवित्र परमेश्वर का आत्मा रहता है; और मैंने उसको अपना स्वप्न यह कहकर बता दिया, कि हे बेलतशस्सर तू तो सब ज्योतिषियों का प्रधान है, मैं जानता हूँ कि तुझ में पवित्र परमेश्वर का आत्मा रहता है, और तू किसी भेद के कारण नहीं घबराता; इसलिये जो स्वप्न मैंने देखा है उसे फल समेत मुझे बताकर समझा दे।***

ये दानिय्येल के बारे में कहे उन लोगों के कुछ ऐसे वाक्य हैं जो परमेश्वर के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे।

- पवित्र परमेश्वर का आत्मा उसमें रहता है (दानिय्येल 4:8-9, 4:18, 5:11,14)
- तू किसी भेद के कारण नहीं घबराता(4:9)
- ....उसमें प्रवीणता और परमेश्वरों के तुल्य बुद्धि पाई गई (5:11,14)

हमारे आस-पास के लोग हम में क्या देखते हैं? आओ हम इस अनुछेद पर विचार करें 1कुरून्थियों 9:22-23 मैं निर्बलों के लिये निर्बल-सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊँ। मैं सब मनुष्यों के लिये सबकुछ बना हूँ ताकि किसी न किसी रीति से अनेक लोगों का उद्धार कराऊँ। मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ ताकि दूसरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ।

**उपयोग:**

हम जो करते हैं वो क्यों करते हैं? सुसमाचार के लिये हम क्या कर रहे हैं?

# दिन 25
## परमेश्वर का आत्मा या वेश्यावृत्ति की आत्मा?

**होशे 4:12, 5:4**
*मेरी प्रजा के लोग काठ के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि वेश्यावृत्ति करानेवाली आत्मा ने उन्हें बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर वेश्यावृत्ति करते हैं।*
*उनके काम उन्हें अपने परमेश्वर की ओर फिरने नहीं देते, क्योंकि वेश्यावृत्ति करनेवाली आत्मा उनमें रहती है; और वे प्रभु को नहीं जानते हैं।*

कुछ ऐसे लोगों के चिन्ह जिनमें वेश्यावृत्ति की आत्मा रहती है
- वे सृष्टिकर्त्ता के बजाए मनुष्यों के बनाए हुए वस्तुओं से सलाह लेते हैं
- वे भटक जाते हैं
- वे अपने परमेश्वर के प्रति वफादार नहीं होते
- उनके काम उन्हें परमेश्वर की ओर फिरने नहीं देते
- वे प्रभु का स्वीकार नहीं करते

**उपयोग:**
हम में ऐसे कौनसे चिन्ह हैं जो ये बताते हैं कि हम पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलते हैं?

# दिन 26
# आत्मा हमें स्वप्न और दर्शन देखने में मदद करता है

**योएल 2:28-29**
*उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणि करेंगी, और तुम्हारे धर्मवृद्ध स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा।*

हमें ये प्रश्न पूछने चाहिये:
•क्या हमारे बच्चे भविष्यवाणि करते हैं?
•यदि हम वृद्ध हैं, तो क्या हम सपने देखते हैं?
•यदि हम जवान हैं, तो क्या हम दर्शन देखते हैं?

नीतिवचन 29:18 जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।

वह सुसमाचार एक खुला दर्शन है, जो मसीह को प्रकट करता है, जो पापी को नम्र बनाता और उद्धारकर्त्ता की सराहना करता है, जो बातचीत और जीवन में पवित्रता को बढ़ावा देता है: और ये ऐसे अनमोल सच हैं जो आत्मा को जीवित रखता और नाश होने से बचाता है।

**उपयोग:**
पहले, आज और भविष्य में आपके दर्शन/सपने क्या हैं। धन्यवाद करो और परमेश्वर की खोज करो।

# दिन 27
# आत्मा लोगों को उनके अपराध और पाप बताता है

**मीका 3:8**
***क्योंकि मैं तो प्रभु की आत्मा से शक्ति, न्याय, और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूँ कि मैं याकूब को उसका अपराध और इस्राएल को उसका पाप जता सकूँ।***

पुराने नियम के अधिकांश भविष्यद्वक्ताओं की तरह, मीका का काम था परमेश्वर के लोगों के पापों को प्रकट करना। जिन नबियों के झूठ भ्रष्टाचारी अधिकारियों को अपने बुरे काम आसानी से करते रहने में उनकी मदद करते थे ऐसे झूठे नबियों को मीका ने डाँटा।

देश में ऐसा काम होता है जिस से चकित और रोमांचित होना चाहिये। भविष्वद्वक्ता झूठमूठ भविष्यवाणि करते हैं; और याजक उनके सहारे से प्रभुता करते हैं; मेरी प्रजा को यह भाता भी है, परन्तु अन्त के समय तुम क्या करोगे?

**उपयोग:**
कौनसे ऐसे झूठ हैं जिनसे लोग धोखा खाते हैं? परमेश्वर से मार्गदर्शन की माँग करो।

## दिन 28
# आत्मा हमारे बीच में बना रहता है। इसलिये हम न डरें

**हाग्गै 2:5-9**

*तुम्हारे मिस्त्र से निकलने के समय जो वाचा मैंने तुमसे बांधी थी, उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है; इसलिये तुम मत डरो। क्योंकि सेनाओं का प्रभु यों कहता है, अब थोड़ी ही देर बाकि है कि मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र और स्थल सबको कम्पित करूँगा। और मैं सारी जातियों को कम्पाऊँगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूँगा, सेनाओं के प्रभु का यही वचन है। चाँदी तो मेरी है और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के प्रभु की यही वाणी है। इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं के प्रभु का यही वचन है, और इस स्थान में मैं शान्ति दूँगा, सेनाओं के प्रभु की यही वाणी है।*

परमेश्वर ने केवल मसीहा के आने और भविष्य में बनाए जानेवाले भवन को उनकी महिमा के तेज से भरने का वचन ही नहीं दिया, परन्तु उन्होंने शान्ति का वचन भी दिया। "इस स्थान" का तात्पर्य यरूशलेम से है जहाँ "शान्ति के राजकुमार" के रूप में मसीह राज करेंगे।

जो आज मसीह पर विश्वास करते हैं; प्रायश्चित के लिये यीशु की मृत्यु और विजयी पुनरूत्थान के कारण परमेश्वर के साथ उनका मेल–मिलाप है। (रोमियों 5:1)। और खुद को मसीह के प्रति समर्पित करने और उसपर पूरा भरोसा रखने के कारण सम्भवत: वे "परमेश्वर की शान्ति" का आनन्द भी उठा पाएंगे।

**उपयोग:**

हमारे डर और हमारी असुरक्षितताएँ क्या हैं? उनके लिये प्रार्थना करो।

# दिन 29
# न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु आत्मा से

**जकर्याह 4:6**

*तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, जरूब्बाबेल के लिये प्रभु का यह वचन है; न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के प्रभु का यही वचन है।*

वचन शायद सैनिकी शक्ति और एकजुट होकर लोग क्या कर सकते हैं इसके संदर्भ में बात कर रहा है, परन्तु बचे हुए लोगों की कोई सेना नहीं थी। “शक्ति” एक व्यक्ति के व्यक्तिगत ताकत की बात करता है, परन्तु इस बात पर कोई शक नहीं कि जरूब्बाबेल की शक्ति कम हो चुकी थी। भविष्यद्वक्ता का सन्देश था, “हिम्मत मत हारो! एक पूरी सेना जो कभी नहीं कर सकती परमेश्वर का आत्मा हमें वो करने में सक्षम करेगा!”

तीन तरीकों से हम परमेश्वर के काम कर सकते हैं:
- हम अपने खुद के ताकत और बुद्धिमत्ता पर विश्वास कर सकते हैं;
- हम संसार के संसाधन उधार ले सकते हैं; या
- हम परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ पर निर्भर रह सकते हैं।

पहले दो तरीके सफलता देंगे ऐसा लगता है, परन्तु अन्त में वे असफल हो जाएंगे। केवल परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ से किया गया कार्य ही परमेश्वर को महिमा प्रदान करेगा और उनके न्याय की अग्नि के सामने टीकेगा।

**उपयोग:**

हम हमारा भरोसा किस बात पर रखते हैं? आओ जाँचें।

## दिन 30
## आत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं

**जकर्याह 7:12**
***वरन् उन्होंने अपने हृदय को इसलिये वज्र सा बना लिया, कि वे उस व्यवस्था और उन वचनों को न मान सकें जिन्हें सेनाओं के प्रभु ने अपने आत्मा के द्वारा अगले भविष्यद्वक्ताओं से कहला भेजा था। इस कारण सेनाओं के प्रभु की ओर से उनपर बड़ा क्रोध भड़का।***

प्रभु क्रोधित था। लोग प्रभु के वचनों का पालन नहीं कर रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के वचनों पर ध्यान देने से इनकार किया; जिद्दी होकर उन्होंने परमेश्वर के वचनों से अपना मुँह मोड़ लिया और अपने कान बन्द कर लिये।(व.11)। आत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं से क्या बातें की?

- खराई से न्याय चुकाओ (व.9)
- एक दूसरे पर कृपा और दया करो (व.9)
- न विधवाओं पर, न अनाथों पर और न ही परदेशियों पर अन्धेर करना (व.9)
- एक दूसरे की हानि की योजना न बनाओ (व.9)

**उपयोग:**
वचन 9 में लिखी बातों में क्या कुछ ऐसा है जिससे हमें पश्चाताप करना है? आओ हम परमेश्वर को क्रोधित न करें। आओ हम आत्मा की अगुवाई में चलें और शान्ति से अपना जीवन बिताएं।